

مثال کے طور پر ایک ادارہ جیسے اسکول کا مطالعہ انٹرویو، کلاس روم کی حرکیات کا مشاہدہ، اسکولی ریکارڈوں، دستاویزوں وغیرہ کا استعمال کرتے ہوئے کیا جاسکتا ہے۔

**Caste:** Caste is a closed form of social stratification in which an individual's social position is fixed by virtue of birth. A person possesses ascribed hereditary membership into his/her parental caste. His/her subsequent social status, rights and obligations towards his caste are thereby fixed and cannot be changed. The four castes in the Indian caste system are associated with broad occupational groupings. Traditionally caste is an ascribed endogamous social group, ranked hierarchically based on ritual, purity and pollution. Each caste has a name and traditionally associated with occupation and observes restriction on commensual relations. Caste can be distinguished from varna. Caste varies from region to region. While varna is flexible, fourfold and pan Indian. Varna is used more as a reference group than an empirical reality. Caste in contemporary India is changing.

**जाति** — जाति सामाजिक स्तरीकरण के बंद स्वरूपों में से एक है, जिसमें व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म के आधार पर सुनिश्चित होती है। एक व्यक्ति अपने माता-पिता की जाति में प्रदत्त वंशानुगत सदस्यता प्राप्त करता है। इस सदस्यता के आधार पर उस व्यक्ति को मिलने वाली जाति (मूलक) सामाजिक प्रस्थिति, अधिकार एवं दायित्व (जो कि जाति के विषय में हैं) सुनिश्चित होते हैं, जिन्हें परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। भारतीय जाति व्यवस्था से संबद्ध चार जातियाँ व्यापक दृष्टि में व्यावसायिक समूह हैं। परंपरागत रूप में जाति एक प्रदत्त अंतर्विवाही सामाजिक समूह है, सामाजिक संस्तरण में जिसकी स्थिति संस्कार, पवित्रता एवं अपवित्रता की विशेषताओं पर आधारित होती है। प्रत्येक जाति का अपना एक नाम होता है। यह व्यवसाय है तथा यह खान-पान संबंधी प्रतिबंधों की परंपरा से जुड़ी होती है। जाति को वर्ण से पृथक् किया जा सकता है। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों की जाति में अनेक विभेद देखे जा सकते हैं, जबकि वर्ण नमनीय चार स्तरीय एवं परंपरागत भारतीय संगठन है। वर्ण को अधिकतर एक आनुभविक यथार्थ के स्थान पर संदर्भ समूह के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। समकालीन भारत में जाति परिवर्तित हो रही है।

**जाति:** जाति सामाजिक स्तरीकरण के बंद स्वरूपों में से एक है, जिसमें व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म के आधार पर सुनिश्चित होती है। एक व्यक्ति अपने माता-पिता की जाति में प्रदत्त वंशानुगत सदस्यता प्राप्त करता है। इस सदस्यता के आधार पर उस व्यक्ति को मिलने वाली जाति (मूलक) सामाजिक प्रस्थिति, अधिकार एवं दायित्व (जो कि जाति के विषय में हैं) सुनिश्चित होते हैं, जिन्हें परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। भारतीय जाति व्यवस्था से संबद्ध चार जातियाँ व्यापक दृष्टि में व्यावसायिक समूह हैं। परंपरागत रूप में जाति एक प्रदत्त अंतर्विवाही सामाजिक समूह है, सामाजिक संस्तरण में जिसकी स्थिति संस्कार, पवित्रता एवं अपवित्रता की विशेषताओं पर आधारित होती है। प्रत्येक जाति का अपना एक नाम होता है। यह व्यवसाय है तथा यह खान-पान संबंधी प्रतिबंधों की परंपरा से जुड़ी होती है। जाति को वर्ण से पृथक् किया जा सकता है। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों की जाति में अनेक विभेद देखे जा सकते हैं, जबकि वर्ण नमनीय चार स्तरीय एवं परंपरागत भारतीय संगठन है। वर्ण को अधिकतर एक आनुभविक यथार्थ के स्थान पर संदर्भ समूह के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। समकालीन भारत में जाति परिवर्तित हो रही है।

हوتا है اور روایتی طور پر وہ پیشے سے متعلق ہوتی ہے۔ ذات کو ورن سے الگ کیا جاسکتا ہے۔ ذات خطے در خطے مختلف ہوتی ہے۔ ورن میں چمک ہوتی ہے۔ یہ چار سطحی اور خالص ہندوستانی نوعیت کا ہوتا ہے۔ ورن کا استعمال تجربی حقیقت کی بہ نسبت ایک حوالہ گروہ کے طور پر زیادہ کیا جاتا ہے۔ عصری ہندوستان میں ذات کا تصور بدل رہا ہے۔

**Caste System:** Caste system refers to one of the forms of social stratification. Caste, slavery, estate and class are four forms of stratification. It is one of the important features of Indian Society. Varna model of hierarchy, ascriptive status, traditional heredity wise occupations, endogamy, purity-pollution principles, privileges, disabilities, sub-systems and caste associations, etc. are attributes of caste systems. In one Varna, we can find several castes. Hindu religion provides legitimacy to caste system.

**जाति व्यवस्था** — जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का एक स्वरूप है। दासता, जागीर एवं वर्ग के अतिरिक्त जाति व्यवस्था भी सामाजिक स्तरीकरण के चार स्वरूपों में से एक है। जाति भारतीय समाज की एक मुख्य विशेषता है। संस्तरण का वर्ण प्रारूप, प्रदत्त प्रस्थिति, परंपरागत वंशानुगत व्यवसाय, अंतर्विवाह, पवित्रता-अपवित्रता का सिद्धांत, विशेषाधिकार एवं नियोग्यताओं की उपव्यवस्था एवं जाति संगठन जाति व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं। हिंदू धर्म जाति व्यवस्था को वैधता प्रदान करता है।

**जाति का نظام:** जाति का نظام طبقہ بندی کی ایک شکل ہے۔ غلامی، جاگیر اور زمرہ بندی، طبقہ جاتی کے علاوہ ذات کا نظام بھی سماجی طبقہ بندی کی چار شکلوں میں سے ایک ہے۔ یہ ہندوستانی سماج کی ایک اہم خصوصیت ہے۔ درجہ بندی کا ورن نظام، مفوضہ حیثیت، روایتی و موروثی پیشہ، داخلی ازدواج، پاکی اور آلودگی کے اصول، مراعات، معذوری ذیلی نظام اور ذاتی، تنظیمیں وغیرہ ذات کے نظام کی اہم خصوصیات ہیں۔ ہندو مذہب ذات کے نظام کو جائز قرار دیتا ہے۔

**Casteism:** Casteism may be defined as caste based discrimination. It involves strict loyalty to one's caste; to an extent of discriminating others on the grounds of caste. Often associations, political parties and other groups are formed on the basis of caste. Politicians, in order to organise their power and ensure their vote bank, evoke caste identities in people and mobilise them to organise themselves into caste groupings. Caste based discrimination is abolished by law and is illegal in modern India. Caste however persists in new forms. It is important to distinguish between caste based movements that have evolved to challenge caste discrimination and everyday practices of casteism that treat people unequal because of the caste they belong to.